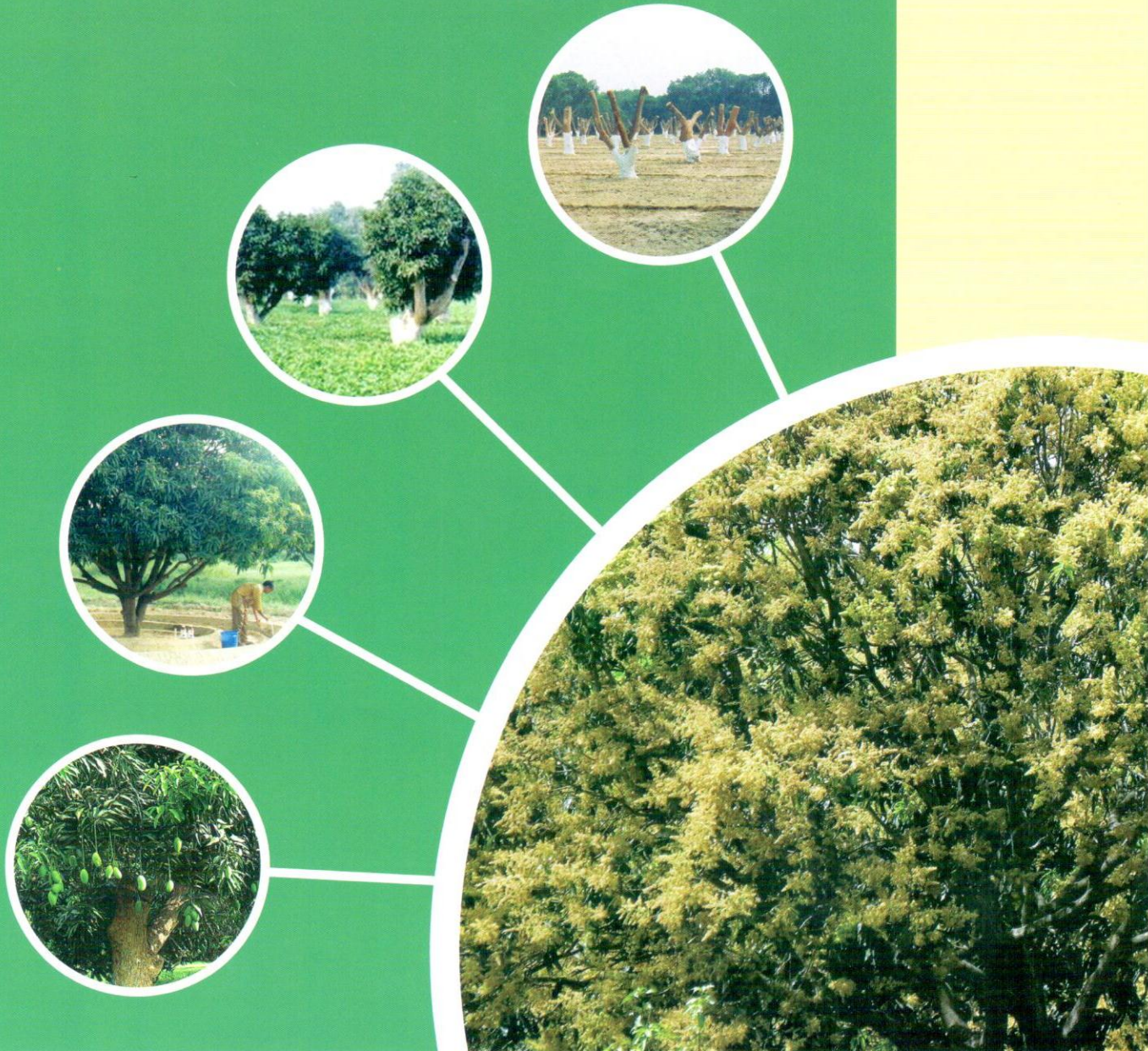


आम की उत्पादकता एवं गुणवत्ता सुधार हेतु बागों का तुड़ाई पूर्व प्रबंधन

15/4

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Agri search with a human touch

तकनीकी फोल्डर सं.:
पुनर्मुद्रित 2013(1)



केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान

रहमानखेड़ा, पोस्ट काकोरी, लखनऊ 226 101

दूरभाष: (0) 0522-2841022-24; फैक्स: 0522-2841025

वेबसाइट: www.cishlko.org; ईमेल: cish.lucknow@gmail.com



आम की उत्पादकता एवं गुणवत्ता सुधार हेतु बागों का तुड़ाई पूर्व प्रबंधन

लखनऊ का माल, मलिहाबाद एवं काकोरी क्षेत्र दशहरी आम के लिये विख्यात है। दशहरी के साथ-साथ यहाँ पर लंगड़ा एवं चौसा प्रजातियों की भी अच्छी बागवानी होती है। यहाँ की मृदा एवं जलवायु गुणवत्तायुक्त आम उत्पादन हेतु उपयुक्त है किन्तु विगत कुछ वर्षों में आम के बागों की उत्पादकता एवं फलों की गुणवत्ता में काफी कमी पायी गयी है। आम के बागों की बढ़ती उम्र के साथ उनमें सूर्य के प्रकाश की कमी, समुचित वितान प्रबंधन, बागों का उचित पोषण एवं जल प्रबंधन तथा नाशीकीट एवं रोगों का समय से समुचित निदान न हो पाना इसके मुख्य कारण हैं। इस प्रकाशन का उद्देश्य गुणवत्तायुक्त आम उत्पादन की समस्याओं का क्षेत्रीय परिस्थितियों के अनुरूप समाधान उपलब्ध कराना है।

- 1. मृदा :** इस क्षेत्र की मृदा सामान्यतः बलुई दोमट से दोमट है जो आम उत्पादन के लिये सर्वथा उपयुक्त है किन्तु आम के बागों में समुचित पोषण प्रबंधन नहीं होने से कुछ मुख्य तत्वों जैसे नाइट्रोजन, पोटैशियम तथा सूक्ष्म पोषक तत्वों जैसे बोरॉन एवं जस्ता की कमी लगभग सभी बागों में पायी गयी है जो आम की उत्पादकता एवं गुणवत्ता दोनों को प्रभावित कर रही है। अतः बागों के पोषण में इन तत्वों के प्रबंधन पर विशेष ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है।
- 2. गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री:** दशहरी, लंगड़ा एवं चौसा इस क्षेत्र की प्रमुख प्रजातियाँ हैं। आम्रपाली एवं मल्लिका प्रजातियाँ भी पिछले कुछ वर्षों से इस क्षेत्र में अच्छा प्रदर्शन कर रही हैं। अम्बिका एवं अरुणिका केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान द्वारा विकसित आम की नवीनतम किस्में हैं। आवश्यक है कि इन प्रजातियों के वीनियर/वेज कलम द्वारा उत्पादित गुणवत्ता युक्त स्वस्थ कलमी पौधों से ही नये बाग लगाये जायें।
- 3. सिंचाई**
 - फलों की तुड़ाई उपरान्त मृदा में नमी की कमी होने पर खादों एवं उर्वरकों के प्रयोग से पूर्व एक हल्की सिंचाई करें।
 - फल लगने से उनके विकास के मध्य 20–25 दिन के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार 2–3 सिंचाई करें।
 - फल बैठते समय पहली सिंचाई करना आवश्यक है।
 - फलों की परिपक्वता के 15 दिन पूर्व सिंचाई बंद कर दें।
- 4. खरपतवार नियंत्रण:** बागों को खरपतवार मुक्त रखना चाहिए। समुचित खरपतवार नियंत्रण हेतु वर्षा ऋतु की समाप्ति पर एक जुताई करना चाहिए। आवश्यक हो तो ग्लाइफोसेट [1.8–2.0 ली. (ए.आई.)/हे.] के घोल का छिड़काव खरपतवारों पर करें।
- 5. खाद एवं उर्वरक :** खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग मृदा एवं पत्तियों में उपलब्ध पोषक तत्वों की जाँच के आधार पर करना चाहिए अन्यथा निम्नलिखित संस्तुति के अनुसार खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करें।
 - फलों की तुड़ाई के उपरान्त 50 कि.ग्रा. गोबर की खाद एवं इसके एक माह बाद 2.25 कि.ग्रा. यूरिया, 3.0 कि.ग्रा. सिंगल सुपर फास्फेट, 1.0 कि.ग्रा. म्युरेट आफ पोटाश, 200 ग्रा. जिंक सल्फेट, 50 ग्रा. बोरेक्स एवं 100 ग्रा. कॉपर सल्फेट प्रति वृक्ष की दर से पेड़ के तने से 2 मी. की दूरी पर 30 से.मी. चौड़ी एवं 20 से.मी. गहरी नाली में प्रयोग करना चाहिए।
 - 10 ग्रा./ली. सल्फेट ऑफ पोटाश, 6 ग्रा./ली., जिंक सल्फेट एवं 3 ग्रा./ली. बोरेक्स के घोल को फलों के मटर के दानों के बराबर होने पर एवं उसके 20–25 दिन बाद दो बार छिड़काव करें।
- 6. अनियमित फलन प्रबंधन :** उत्तर भारत में उगाई जाने वाली व्यावसायिक किस्में, विशेषकर दशहरी, लंगड़ा एवं चौसा अनियमित फलन विकार से ग्रसित हैं। इस विकार में पेड़ एक वर्ष अधिक फल (फलन वर्ष) व दूसरे वर्ष बहुत कम या बिल्कुल ही नहीं फल (अफलन वर्ष) देते हैं। इसके प्रबंधन के लिये पैक्लोब्यूट्राजॉल (कल्टार) का प्रति वृक्ष 3.2 मि. ली. प्रति मीटर छाया क्षेत्र की दर से तने से 1.5–2 मीटर की दूरी पर बनाई गयी 30 से.मी. चौड़ी एवं 20 से.मी. गहरी नाली में सितंबर माह में प्रयोग करें।

7. फसल सुरक्षा

| कीट/ रोग | | प्रयोग का समय (लगभग) | प्रबंधन/ उपचार |
|----------------|---|-----------------------------------|---|
| कीट | | | |
| गुजिया |  | दिसंबर-जनवरी फरवरी- मार्च | बाग की गहरी जुताई करें एवं मुख्य तने पर पॉलीथीन की 25 से. मी. चौड़ी पट्टी जमीन से 0.5-0.75 फुट ऊपर लगायें। पेड़ के तने के आस-पास मिट्टी चढ़ाकर, उस पर क्लोरपायरीफॉस चूर्ण (250 ग्रा./पेड़) का बुरकाव करें। पेड़ों पर गुजिया चढ़ गयी हो तो 2.0 मि.ली./ली. कार्बोसल्फान (25 ई.सी.) या डायमथोएट का छिड़काव फूल खिलने से पहले करें। |
| भुनगा |  | मार्च-जून | जब बौर 8-10 से.मी. के हों, तब 0.3 मि.ली./ली. इमिडाक्लोप्रिड एवं फलन के उपरान्त 0.2 ग्रा./ली. थायोमथोकजॉम के घोल का छिड़काव करें। |
| डासी मक्खी |  | अप्रैल- अगस्त | बागों में काष्ठ निर्मित यौन गन्ध ट्रैप्स (10 ट्रैप्स/हे.) (लकड़ी के 5x5x1 से.मी. के टुकड़ों को एल्कोहल, मिथाईल यूजिनॉल, मैलाथियान में 6:4:1 के अनुपात में 48 घंटे भिगोयें) को लटकाना चाहिए। |
| तना भेदक |  | तनों पर छिद्र एवं बुरादा दिखने पर | डाईक्लोरवास 2.0 मि.ली./ली. के घोल में रूई को भिगोकर कीट द्वारा निर्मित छिद्रों में डालकर, छिद्रों को मिट्टी के पेस्ट से बन्द कर दें। |
| पुष्पगुच्छ मिज |  | जनवरी- फरवरी | यदि पिछले वर्ष पुष्प-गुच्छ मिज का प्रकोप बाग में देखा गया हो तो 2.0 मि.ली./ली. डाइमथोएट का छिड़काव करें। |
| स्केल |  | जुलाई- सितंबर | 2.0 मि.ली./ली. डाइमथोएट का छिड़काव करें। |
| जाला कीट |  | जुलाई- नवंबर | जालों को तोड़कर जला दें। तत्पश्चात 1 मि.ली./ली. लेम्बडा-सायलोथ्रिन का छिड़काव करें। |
| खर्रा/ दहिया |  | मार्च- अप्रैल | जब बौर 8-10 से.मी. के हों, तब 2.0 ग्रा./ली. घुलनशील गंधक का प्रथम छिड़काव करें। दूसरा 1.0 मि.ली./ली. डाइनोकैप एवं तीसरा 1.0 मि.ली./ली. हैक्साकोनाजोल का 10-15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें। |
| रोग | | | |
| जीवाणु कैंकर |  | मई-जून | 1.0 ग्रा./5 ली. स्ट्रेप्टोसाइक्लिन का 2 छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर करें। |

| | | | |
|---|--|---|--|
| एन्थ्रेक्नोज, सूटी मोल्ड, शोल्डर ब्राउनिंग |  | जून (वर्षा से पूर्व) | 1.0 ग्रा./ली. थायोफेनेट मिथाइल का छिड़काव तुड़ाई से 15 दिन पहले करें। |
| उल्टा सूखा रोग |  | सितंबर से नवंबर | रोगग्रस्त टहनियों को सूखे भाग से 15 से.मी. नीचे से काट दें और कटे भाग पर 10 प्रतिशत कॉपर आक्सीक्लोराइड या कॉपर हाइड्रॉक्साइड का लेप करें। साथ ही 15 दिन उपरान्त उक्त दवा का 3.0 ग्रा./ली. की दर से छिड़काव करें। |
| गोंद निकलना |  | लक्षण प्रकट होने पर | संक्रमित छाल को हटाकर 10 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का लेप करें। |
| उकठा रोग |  | प्रारम्भिक लक्षण (पत्तियों का पीलापन एवं गिरना) प्रकट होने पर | बोर्डो मिश्रण 10 प्रतिशत एवं क्लोरपायरीफॉस 1.0 प्रतिशत का तने पर लेप करें। पूर्ण विकसित वृक्षों के थालों में 200 ग्रा. कॉपर सल्फेट डालकर मिट्टी में मिलायें। |
| गुम्मा विकार |  | अक्टूबर | 4.5 मि.ली./ली. एन.ए.ए. (नेफथलीन एसिटिक एसिड) का छिड़काव करें। |
| झुमका |  | मार्च-अप्रैल | गुम्माग्रस्त बौर तोड़कर नष्ट कर दें। |
| | | मार्च-अप्रैल | खिले हुए बौर पर किसी भी कीट नाशक का छिड़काव न करें तथा परागण में सहायक कीटों की संख्या में वृद्धि करें। |

* उपयोग की अवधि अनुमानित है जो मौसम के अनुसार अलग-अलग हो सकती है। कृपया अद्यतन सूचना एवं जानकारी के लिये के.उ.बा.स. की वेबसाइट www.cishilko.org देखें।

सावधानियाँ

- विक्रेता से हमेशा प्रतिष्ठित कंपनियों द्वारा उत्पादित मानकीकृत एवं संस्तुत रसायन ही खरीदें। उसमें मूल्य लिखित स्पष्ट लेबल लगा होना चाहिये। रसीद को भविष्य में उपयोग हेतु सुरक्षित रखें।
- कीट एवं रोग नियंत्रण हेतु सुझाये गये छिड़काव आवश्यकता होने पर ही करें।
- छिड़काव हेतु कॉपर युक्त फफूँदी नाशक के साथ किसी अन्य रसायन को नहीं मिलायें।
- कीट एवं बीमारियों के नियंत्रण हेतु सुझाये गये रसायनों को एक साथ मिलाकर छिड़काव कर सकते हैं।
- फूल खिले होने पर किसी भी कीटनाशी रसायनों का छिड़काव नहीं करें।
- छिड़काव हेतु तैयार घोल में 0.5 मि.ली./ली. की दर से स्प्रेडर/स्टिकर का सदैव प्रयोग करें।
- कीट एवं फफूँदनाशी रसायनों का प्रयोग संस्तुत मात्रा के अनुसार ही करें।

तकनीकी स्रोत: कैलाश कुमार, आर.पी. शुक्ल, बी.के. पाण्डेय, पी.के. शुक्ल, बरसाती लाल, दुष्यंत मिश्र, अतुल सिंघा, तरुण अदक, बालाजी राजकुमार एवं एच. रविशंकर

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें :

डा. एच. रविशंकर, निदेशक

केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, पो. काकोरी, लखनऊ-226 101

सम्पादन : प्रकाशन समिति

दूरभाष कार्यक्रम (शुक्रवार) : 0522-2841082